अदम्य

Indomitable

विद्यालय पत्रिका 2020

केन्द्रीय विद्यालय वायुसेना स्थल मकरपुरा,
वडोदरा (गुजरात)
E-mail: kvafsbaroda@gmail.com, Website: https://no3baroda.kvs.ac.in

केन्द्रीय विद्यालय नं.०३ ,ए. एफ .एस मकरपुरा ,वड़ोदरा

मुख्य संरक्षक

डॉ.जयदीप दास

उपायुक्त

के॰ वि॰ सं॰ अहमदाबाद संभाग, गांधीनगर

श्रीमती श्रुति भार्गव

सहायक आयुक्त

के॰ वि॰ सं॰ अहमदाबाद संभाग, गांधीनगर

संरक्षक

श्री रमेश कुमार

प्राचार्य

मुख्य संपादक

श्री अनिल कुमार

(पी. जी. टी. अंग्रेज़ी)

संपादक मंडल

(हिन्दी विभाग)	(संस्कृत विभाग)	(अंग्रेजी विभाग)
श्रीमती त्रिवेणी शाक्यवार	श्री पी. के. परमार	श्रीमती पवनलता कुसुमाकर
(पी.जी.टी. हिन्दी)	(टी. जी. टी. संस्कृत)	(टी.जी.टी. अंग्रेजी)

छात्रसंपादक मंडल

स्मिता कुमारी	भव्या	श्रेष्ठा
(ग्यारहवीं ब)	(ग्यारहवीं स)	(नवीं ब)

कला सौजन्य एवं मुख्य पृष्ठ सज्जा

डॉ. तरुणा

From Editor's desk . . .

Dear Reader,

A Vidyalaya Magazine provides glimpses of the campus life of its students whether it is academic, literary, sports, cultural events or extracurricular or co-curricular activities. It's also a tribune to give expression to the creative abilities of the students of a Vidyalaya. This Vidyalaya magazine put across the various accomplishments of the students in different fields be it academic and non-academic.

Swami Vivekananda says that a good teacher does not teach a student but make him/her able to recognize his/her untapped talents/abilities to the fullest, here we have tried to provide a platform to the students to recognize and give expression to their latent talents. The creative energy of the students has found manifestation through the poems, small stories, sketches, drawing etc which have been included here in the magazine. I find this magazine as an exertion of our students which may not be perfect, but it is definitely creative. It reflects the indomitable spirit of our students as the whole world was ravaged by the ongoing pandemic COVID19.

The magazine that you are holding in your hands is a finished product of long process of polishing the raw material received from various stockholders. It's a result of long contemplation and sustained efforts of the editorial board of the magazine who took utmost care in choosing and correcting the raw material received from the students.

I am to sincerely acknowledge my indebtedness to my Principal Mr. Ramesh Kumar, who apart from constantly encouraging me, was readily available to help me whenever and whatever I contact him for. He remained a source of inspiration for completing this task during the preparation of this magazine.

I wish to express my gratitude to my colleagues Ms. Triveni Shakyawar, Ms. Deepika Pande, and Ms.Vishwa Purohit for their assistance rendered during proof reading of the manuscript.

Lastly my acknowledgement is due to God Almightly who put me in such an environment so as to complete this task without which this Magazine would not have seen daylight.

Happy Reading!

Anil Kumar

Dr. Jaideep Das
Deputy Commissioner

केंद्रीय विद्यालय सगंठन
अहमदाबाद संभाग / Ahmedabad Region
Sector-30,Gandhinagar (Gujarat)
E-mail : kvsroadmn@gmail.com
Website:
www.kvsroahmedabad.org

संदेश

प्रिय श्री रमेश कुमार,

यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि केन्द्रीय विद्यालय नं.3, वायुसेना स्थल मकरपुरा वड़ोदरा विद्यालय ई-पत्रिका 2020 के प्रथम अंक का प्रकाशन कर रहा है |

विद्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका से विद्यालय की प्रगति एवं शैक्षणिक उन्नयन के स्तर का ज्ञान प्राप्त होता है | पत्रिका के प्रकाशन से छात्र – छात्राओं में सृजनशीलता, रचनात्मक प्रतिभा, व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास एवं देशप्रेम की भावना को विकसित करने में सहायता प्राप्त होती है | अपेक्षा है की प्रकाशित होने पर विद्यालय पत्रिका ज्ञान-वर्धक और रोचक सामग्री से परिपूर्ण होगी|

मैं प्राचार्य, सभी शिक्षकों और छात्रों को उनके इस अनपुम प्रयास के लिए हार्दिक शुभ-कामनाएँ देता हूँ |

डॉ. जयदीप दास
(उपायुक्त)

I.I. KUTAPPA
Commodore

Air Officer Commanding Air
36 Wing, (A.F), Baroda

Message from Chairman, VMC

It gives me immense pleasure to know that Kendriya Vidyalaya Makarpura is publishing the 'Vidyalaya Patrika' for the academic year 2020-21.

The school magazine not only reflects achievements of the school but is also a platform for nurturing the budding literary talent of its students. It gives expression to their ideas and vision and provides the opportunity to students with the guidance of their teachers to showcase their creativity and imagination.

On this occasion, I extend my good wishes to all concerned and expect that students and staff shall keep coming up with new ideas and knowledge oriented information which will be informative and entertaining. It will also reflect the creative and innovative activities undertaken by the institution throughout the year.

I extend my hearty congratulations to the Principal, staff and the students for this venture and wish the magazine a grand success. All the best and keep up the good work.

Jai Hind!

I.I. KUTAPPA
Air Commodore

केंद्रीय विद्यालय क्र.३, वायुसेना स्थल मकरपुरा , वड़ोदरा

केन्द्रीय विद्यालय संगठन

प्राचार्य संदेश

के.वि संगठन देश की रक्षा में जुटे हुए कर्मचारियों एवं स्थानांतरित कर्मचारियों के बच्चों को शिक्षित, संस्कारित एवं देश के प्रति समर्पण के लिए हमेशा अग्रसर रहता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन जब से अपने अस्तित्व में आया है तब से अपनी अद्भुत सेवाएँ देता आ रहा है | बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए केंद्रीय विद्यालय एक अनूठा संस्थान है | प्रत्येक के॰ वि॰ अपने आप में एक लघु भारत की तस्वीर प्रस्तुत करता है | केन्द्रीय विदयालय में बच्चे देश के विभिन्न - विभिन्न क्षेत्रों से आते हैं एवं समग्र शिक्षा ग्रहण करते हैं । इस प्रक्रिया से उनमें आपसी सद्भाव एवं भारतीयता की भावना सम्पूर्ण रूप से विकसित होती है।

केन्द्रीय विद्यालय, क्रं 03, वायुसेना स्थल, मकरपुरा, वड़ोदरा प्रकृति की गोद में स्थित है एवं सभी आधुनिक सुविधाओं से परिपूर्ण है। बच्चों के चंहुमुखी विकास के लिए यहाँ पर सभी विज्ञान प्रयोगशालाएं, गणित प्रयोगशाला, कार्यानुभव प्रयोगशाला, कला विभाग, प्राथमिक विद्यार्थियों के लिए संसाधन कक्ष एवं पुस्तकालय सम्पूर्ण सुविधाओं से लैस है। बच्चों के शारीरिक विकास के लिए फुटबौल, वोलीबौल, टेबल-टेनिस, बास्केट बौल एवं बाल उद्यान मौजूद हैं । विद्यालय के परिसर में हरे भरे पेड़ पौधे एवं चारों ओर हरीतिमा व्याप्त है जो विश्वप्रसिद्ध शांतिनिकेतन का आभासी प्रतिबिंब प्रस्तुत करता है। इस विद्यालय में निरंतर बोर्ड के परीक्षा परिणाम अव्वल रहे हैं । पाठ्य सहगामी

क्रिया-कलाप निश्चित रूप से पूरे वर्ष के कलेंडर के अनुरूप होते हैं , जिससे बच्चों का सर्वांगीण विकास होता है। विद्यालय स्तर, क्षेत्रीय स्तर एवं राष्ट्रीय स्तर की विभिन्न प्रतियोगिताओं में यहाँ के बच्चे बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं एवं विशेष दर्जा हासिल करते हैं ।

बच्चों को शैक्षिक भ्रमण का लाभ देने के लिए वायुसेना मकरपुरा द्वारा आयोजित विभिन्न क्रिया-कलाप जैसे कि एयर शो इत्यादि का व्यक्तिगत पर्यवेक्षण करवाया जाता है | यहाँ के विद्वान शिक्षक केवल पाठ्यक्रम प्रक्रियाएँ ही नहीं अपितु अतिरिक्त पाठ्य-क्रम प्रक्रियाओं में भी बच्चों को दक्ष बनाते हैं ।

केन्द्रीय विद्यालय, वायुसेना स्थल, मकरपुरा का नेतृत्व करने का सौभाग्य मुझे 03 अक्तूबर 2019 से प्राप्त हुआ | यहाँ के पूर्व शिक्षित बच्चें देश और विदेश के विभिन्न हिस्सों में अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा रहे हैं । किसी दार्शनिक ने कहा है - उच्च स्तर पाना आसान है पर उच्च स्तर को बरकरार रखना उससे भी मुश्किल है। इसलिए हर क्रिया कलाप में निरंतर नूतनता की आवश्यकता है ताकि विद्यालय लगातार उन्नति के नये शिखर को छूए। इसी संदर्भ में ,मैं और मेरे समर्पित कर्मचारी संलग्न हैं ।

मैं इस पत्रिका के प्रकाशन में संपादक मण्डल को बधाई देता हूँ । जिनके अथक प्रयास से बच्चों के अनुभव एवं गुणात्मक अभिव्यक्ति आम जन के सामने प्रस्तुत हो पाई हैं । एक कवि की संकल्पना को उदधृत करते हुए, मैं अपनी लेखनी को विराम देते हुए बच्चों को आने वाली परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन की शुभकामनाएँ देता हूँ -

"जीत उसी की होती है जिसमें शौर्य, धैर्य, साहस, सत्व और धर्म होता है।"

(रमेश कुमार)
प्राचार्य

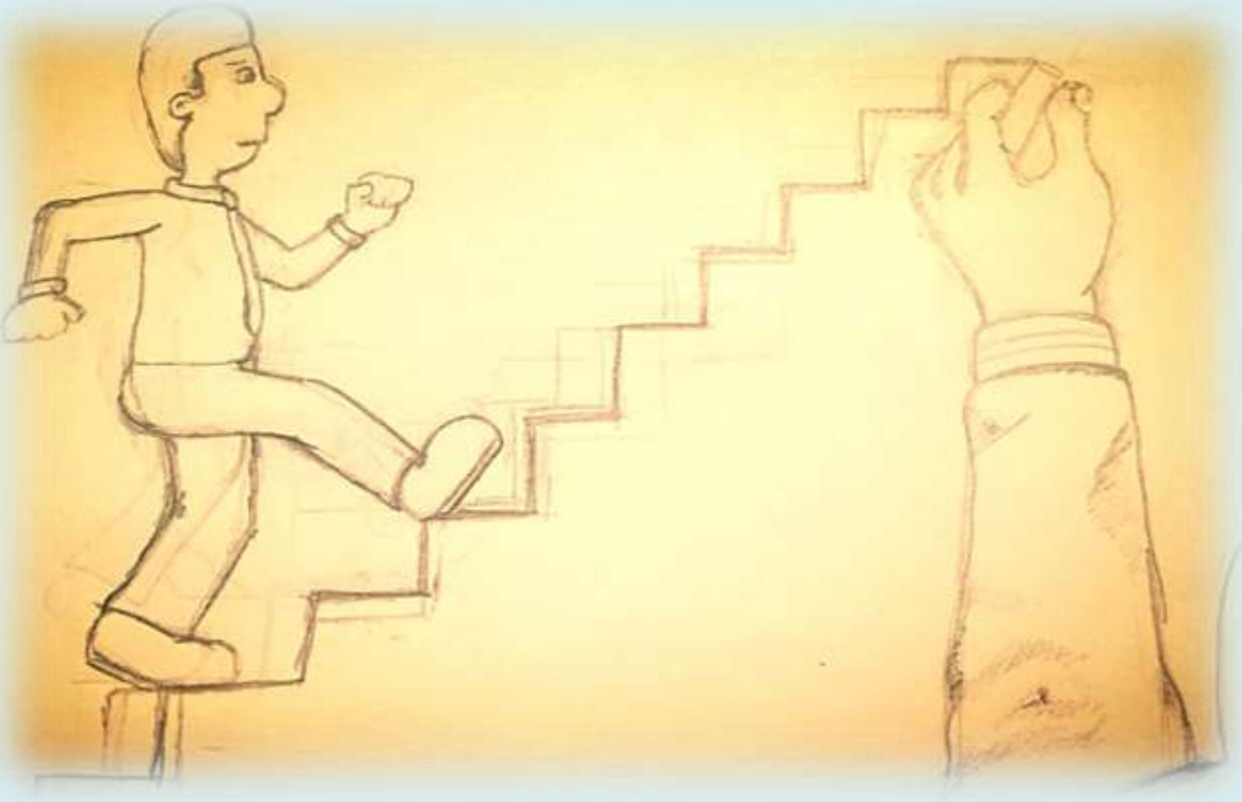

Toppers X
2019-20

Position	Name of the student	Marks Obtained	Marks in %
1	PRIYANSHU KUMAR JHA	488	97.60
2	OMENDRA KUMAR UPADHYAY	479	95.80
3	NISARG KUMAR PANCHAL	477	95.40
3	AKASH MISHRA	477	95.40
4	DHAIRYA HIRENKUMAR SHAH	475	95.00
4	ADARSH SHARMA	475	95.00
5	AARTI YADAV	474	94.80
6	PRANIKA HEMANT RAGHORTE	471	94.20

6	HARSHITA SINGH	471	94.20
6	ADITYA KUMAR SHARMA	471	94.20
6	HARAPRIYA SWAIN	471	94.20
7	RITIK TIWARY	470	94.00
8	NEONICA RAI	469	93.80
8	GARGI VERMA	469	93.80
9	AMISHA KUMARI	468	93.60
9	SAMIMA KHATUN	468	93.60
9	ANUBHAV	468	93.60
9	TUSHAR KUMAR	468	93.60
10	NIKHIL KUMAR	466	93.20

Toppers XII 2019-20

SCIENCE STREAM

Position	Name of the student	Marks Obtained	Marks in %
1	TARUN SINGH	481	96.20
2	BHAGAT MEET VINAY KUMAR	476	95.20
3	MUSKAN MISHRA	473	94.60
4	DWIJSINH H GOHIL	469	93.80
5	ASHISH YADAV	468	93.60
6	MAYANK KUMAR	465	93.00

7	AARYAN PAWAR	464	92.80
8	SARTHAK CHAUHAN	463	92.60
9	KARUNA SHARMA	460	92.00
10	ANJALI SINGH	457	91.40
11	DEVANG SINGH	455	91.00

COMMERCE STREAM

Position	Name of the student	Marks Obtained	Marks in %
1	BHAVNA SHARMA	466	93.20
2	MUSKAN GOEL	465	93.00
3	JAYANT RANKA	453	90.60

Vidyalaya Management Committee

01	Chairman	I.I. Kutappa AIR OFFICER COMMANDING
02	Member, (One Member nominated by Chairman	Gp. Capt. AKSHAY RATHODE
03	Member, (Eminent Educationist)	Dr. JYOTSANA FANSE Assistant professor ,German department MSU
04	Member, (Eminent Educationist)	Dr. H.P. Soni Assistant professor department of Chem. MSU
05	Member (An eminent Person in area known for outstanding work in the field of culture	Prof. Gaurang Bhusan Faculty of performing art MSU
06	An Eminent Medical Officer	Sqn Ldr ANANT OBEROI

	Doctor of the Area	Station Medical Officer
07	Member (Representative of SC/ST belonging to Class-I service)	Mr. Dharam Pal JE MES Darjipura
08	Member (A senior most teacher with longest stay)	Ms. H.C.PATEL TGT (WE)
09	Member Secretary (Principal)	Mr. Ramesh Kumar, Principal
10	Co-opted Member	Gp. Capt. D.K.SHARMA, AFS, DARJIPURA Chief Admin Officer 36 wing
11	Chairman, CGEWCC	Commissioner CUSTOM AND EXCISE DEPARTMENT

Annual Report

This Vidyalaya initiated its journey in the year 1984, and since then it has now grown into an army of about 1700 learners with a workforce of 50 teachers and 6 support staff who have been working with sincere dedication to provide the children with the knowledge and skills of the 21st century.

Infrastructure:

To fulfil the demand of the new era, the Vidyalaya has a promising infrastructure which helps our students to succeed in all fields.

- We have high-tech classrooms with computers, LCD Projectors, Interactive Boards and Visualizers along with Internet Connectivity where latest e-learning practices can be conducted.
- We have 3 computer labs with approx. adequate number of computers, high-speed internet connection, ceiling mount LCD projectors and interactive boards.

- Recently we have equipped our Sr. Computer Lab, Chemistry Lab and Library with latest IT gadgets like Apple iPad, Apple TV & Projectors to inculcate the latest trends in the field of Information Technology.
- Physics lab, Chemistry lab, Biology lab, Jr. Science lab and Maths lab are made hi- tech to instil the scientific skills in budding scientists.
- With more than Eleven thousand books & many Computers with internet, Vidyalaya's computerized library acts as delivery room for the birth of ideas and an open door to wonder and achievements.
- One resource center is there for tiny tots of primary classes where the concept of "Joy of Learning" is guiding force. Another resource center is there for secondary section to make non-scholastic subjects enjoyable.
- As per a famous Latin quotation "sound mind in the sound body" Vidyalaya has sports and games facility in Kabaddi, Basketball, Kho-Kho, Volleyball, Table Tennis & Chess to keep pupil healthy and fit.
- Vidyalaya has three Reverse Osmosis water plants with 150 litre capacity each to facilitate students with potable drinking water.

Important Events:

- Along with diversified scout & Guide activities, this year we have also performed various NCC activities.

- All-important National Festivals & Days are celebrated with full enthusiasm & spirit.
- Faculties from various institutions visited our Vidyalaya to enrich our students on latest burning issues, career growth and development & programme for Adolescents.
- Career guidance programmes were organized for various fields of life.
- We celebrated the birth anniversary of our former President, Dr.Sarvapalli Radhakrishnan as the Teacher's day.
- Other important days like Yoga Day, Unity Day, National Education Day, Children'sday, Sports Day etc. were also celebrated in the Vidyalaya.
- Vidyalaya has observed Hindi Pakhwara, Swachchta Pakhwara and Paryatan Parv during the month of September this year.
- Apart from these activities Vidyalaya has organized Vidyalaya Level Social Science Exhibition, Science Exhibition, Fire Safety Week, Communal Harmony Week, Library Week etc.
- In cluster level Social Science Exhibition held at KV EME Vadodara, our Vidyalaya stood First in solo song.
- Meetings of VMC & Parent Teacher Association were held during the year as per KVS norms.
- A student council was formed to ensure student participation in the smooth

functioning of various activities of the Vidyalaya.

- International women's day was celebrated.
- Under Ek Bharat Shreshtha Bharat various programs were done incuding Mother Tongue Day.
- Several activities were held to mark the 150th Birth Anniversary of Mahatma Gandhi.
- Students and teachers participated enthusiastically in Fit India movement.
- International Forest Day was celebrated 21st March 2020.
- ACP (Awakened Citizen Program) is being conducted in Vidyalaya.
- Bhasha Sikho Abhiyan is being conducted under EBSB.
- We have organized a classical singing consort through SPIC MACAY . Hariprasad Chaurasiya was the chief signer/musician of this program.

Glimpse of various activities (NCC)

Preserving environment-Plantation Prgramme

Miscellaneous activities- Bharat Scouts & Guides

Keeping India Fit

हिन्दी विभाग

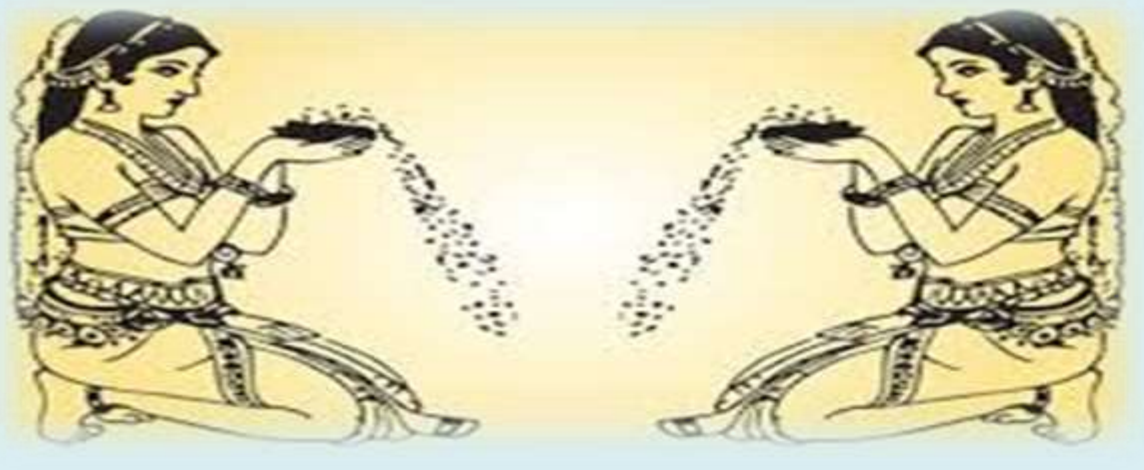

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	नाम
1	कोशिश कर	अंकुश गिरी
2	मेजर ध्यानचंद	अस्तुती कुमारी
3	कोरोना	अनुष्का गुप्ता
4	आरती कोरोना माई की	आर्यन सिंह
5	मच्छर और आदमी	आर्यन सिंह
6	ज़रा सुनो	सिन्थिया
7	कोविद१९	सुमन सेन
8	सामान्य ज्ञान	ईशांत चौहान
9	यह क्यों?	मृदुला राजवर
10	कोरोना महामारी	श्रीमती दीपिका पांडे
11	दोस्ती	मौमिता पाल
12	खुद की खोज	अदिति भंडारी
13	लॉकडाउन में फँसी ज़िंदगी	अमित दाश
14	मज़ेदार रोचक तथ्य	माही पटेल
15	सकारात्मक जीवन का मूलमंत्र	समिमा ख़ातून
16	युगपुरुष महात्मा गांधी	डॉ. तरुना माथुर
17	प्रकृति	श्रीमती त्रिवेणी शाक्यवार

कविता

कोशिश कर

कोशिश कर, हल निकलेगा।
आज नही तो कल निकलेगा।
अर्जुन के तीर सा सध,
मरुस्थल से भी जल निकलेगा।
महेनत कर, पौधो को पानी दे,
बंजर जमीन से भी फल निकलेगा।
ताकत जुटा, हिम्मत को आग दे,
फौलाद का भी बल निकलेगा।
जिन्दा रख, दिल मे उम्मीदों को,
गरल के समन्दर से भी गंगाजल निकलेगा
कोशिशें जारी रख कुछ कर गुजरने की,
जो है आज थमा थमा सा, चल निकलेगा।

- अंकुश गिरि ,VII B

मेजर ध्यानचंद

हॉकी के जादूगर मेजर ध्यानचंद को कौन नहीं जानता हैं उन्हे दुनिया भर में हॉकी के सबसे बेहतरीन खिलाड़ियों में गिना जाता है वह तीन बार ओलंपिक के सवर्ण पदक जीतने वाले भारतीय हॉकी टीम के सदस्य रहे है। इनमे से वर्ष 1928 का एम्स्टर्डम ओलंपिक वर्ष 1932 का लॉस एंजिलिस ओलंपिक और वर्ष 1936 का बर्लिन ओलंपिक शामिल है। ध्यानचंद ने मैदान पर अपनी हॉकी स्टिक से जो जादू दिखाए वह इतिहास में दर्ज हैं। इलाहाबाद में जन्मे ध्यानचंद के जन्मदिन को नेशनल स्पोर्ट्स डे के रूप में मनाया जाता हैं।

ध्यानचंद ने 16 वर्ष की उम्र में भारतीय सेना ज्वाइन की भर्ती होने के बाद हॉकी खेलना शुरू किया ध्यानचंद काफी प्रैक्टिस किया करते थे रात को उनके प्रैक्टिस सेशन को चाँद निकलने से जोड़कर देखा जाता इसलिए उनके साथी खिलाड़ियों ने उन्हे चाँद नाम दे दिया। 1928 में एम्स्टर्डम में हुए ओलंपिक खेलों में वह भारत की और से सबसे ज्यादा गोल करने वाले खिलाड़ी रहे इस टूर्नामेंट में ध्यानचंद ने 14 गोल किए तब एक स्थानीय समाचार पत्र ने लिखा था की यह हॉकी नहीं बल्कि जादू था और तब से ही ध्यानचंद को हॉकी नहीं बल्कि जादू से जाना जाता था और तब से ही ध्यानचंद ने कई यादगार मैच खेलें लेकिन ध्यानचंद ने कहा था की वर्ष 1933 में कोलकाता कस्टम और झांसी हीरोज के बीच खेला गया फ़ाइनल का सबसे ज्यादा पासंदीदा मुक़ाबला था। वर्ष 1932 के ओलंपिक फ़ाइनल में भारत ने संयुक्त राज्य अमेरिका को 24-1 से हराया था। उस मैच में ध्यानचंद ने 8 गोल किए थे उनके भाई रूप सिंह ने 10 गोल किए थे इस टूर्नामेंट में भारत की और से किए गए 35 बोलो में 25 ध्यानचंद और उनके भाई ने

किए थे। इस मुक़ाबले में ध्यानचंद गोल नहीं कर प रहे थे तो उन्होने मैच रेफरी से गोल पोस्ट के आकार के बारे में शिकायत की हैरानी की बात है कि पोस्ट की चढ़ाई अंतराष्ट्रीय मापदंडो के अनुपात में कम थी। 1956 में उन्हे पद्म भूषण से सन्नमानित किया गया। उनके जन्म दिवस के दिन ही खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार अर्जुन और द्रोणाचार्य पुरस्कार प्रदान किया जाते हैं।

- अस्तुती कुमारी
XI B

कविता

कोरोना

कोरोना कोरोना कोरोना
कोरोना हो रहा हर देश हर शहर
दुनिया के हर देश में बरपा रहा अपना कहर,
सुन मेरी बात कोरोना से ना डर
छोटी छोटी बातें और छोटे से उपाय कर
कोरोना से बचना है तो
पब्लिक प्लेस से बच और रह अपने घर,
मजबूरी है जिसकी जाने की
बात है पापी पेट और खाने की
तो कोई बात नहीं किसी बात का डर नहीं
घर से निकल तू मास्क लगा कर
लोगों से बात करना, एक मीटर की दूरी बनाकर,
सुन मेरी बात कोरोना से न डर
छोटी छोटी बातें और छोटे से उपाय कर
कोरोना से बचना है तो
पब्लिक प्लेस से बच और रह अपने घर,
न बात मिला ना हाथ मिला
ना मुह लगा ना गले लगा
ऐडवाइस है सबको पहन हाथ में ग्लबस
और मुह पे अपने मास्क लगा
भीड़ भाड़ से दूर रहकर

आरती कोरोना माई की

ॐ जै कोरोना माई, माता जै कोरोना माई
चाइना तेरा मैका बना, अमेरिका ससुराल
इटली तेरी बहिना ब्याही, ईरान में लिया रूप विकराल
कह गये चवन लाई, ओम जै कोरोना माई
जब जब बढ़ा धरती पर पापियों का भार
तब तब तूने अनेक रूप में लिया माँ का अवतार
तू ही इवोला, इन्फ़लाइटिस, चिकनगुनिया, मलेरिया
तू ही स्वाइनफ्लू, चिकनपोक्स, कोरोना फाइलेरिया
सीमा पार ये जो बैठे है आतंक वादी
रूप विकराल दिखा दो मय्या, हो उनकी बरबादी

मच्छर और आदमी

मच्छर ने कहा इंसान से-

जरा मेरी बात सुनो ध्यान से

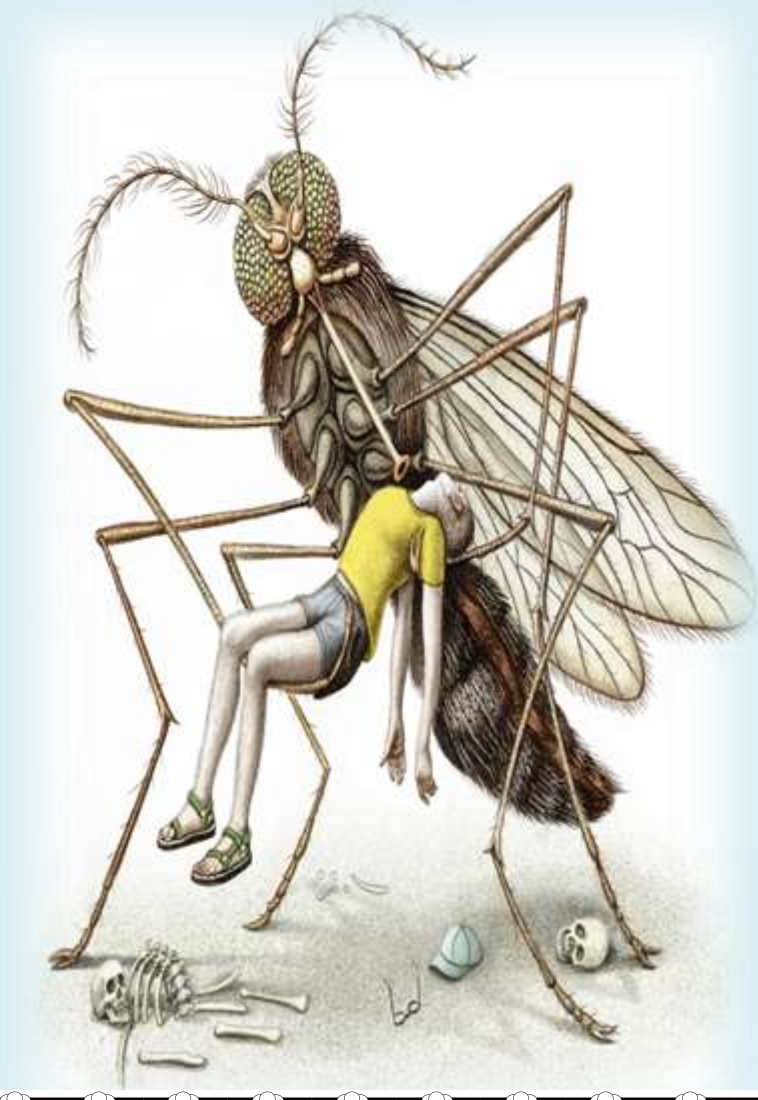

सभी को जीने, खाने और रहने की

आजादी है विधान में

इसलिये हम रहते है आपके मकान में

हमे मरने के लिए आप रोज रोज नए

षड्यंत्र रचते है

कभी ऑल आउट कभी मोरटिन

जलाते हैं

माना कि हम आपका खून चूसते है

लेकिन आप भी कब हमे खाते समय

पूछते हैं

खून चूसना तो हमारी लाचारी हैं

हमारा क्या कसूर यदि आपको हो जाती बीमारी हैं

हम ऐसे नहीं जो पीछे से वार करते हैं

हर अपराध के बाद भी इन्कार करते हैं

हम हिंदुस्तानी है आपको जगा के गाना सुना के वार करते हैं

फिर भी आप नहीं संभलते तो फिर क्यो तकरार करते हैं

हमने माना कि आपको हमें मारने का जनून हैं

लेकिन जरा सोचिये तो सही मायने में हम भी तो आपका ही खून हैं

फिर भी एक सलाह देता हूँ, चाहो तो गौर करो

अपने घर, आँगन व पड़ोस को भी हंमेशा साफ रखो।

-आर्यन सिंह, IX B

कविता

जरा सुनो

ओ सफलता के चाहने वाले जरा सुनो
अगर होना है सफल तो हथियार तो चुनो
सोच को जरा बड़ा करो किसी बात से ना डरा करो
एक बड़ा लक्ष्य चुनो ,करो अपनी बार सबकी सुनो

लोग हसेंगे करेंगे तुम्हे खामोश रहना है
जवाब उनको वक़्त देगा तुम्हे अपना काम करना है
सफलता पाने निकले हो तुम तुम्हे ही जितना है
आत्मविश्वास के साथ हिम्मत ढोल पीटना है

जल्दी सफलता पाने की चिंता में मत करना कभी
देर से सफलता अगर मिले ,सफलता भी होगी उतनी बड़ी
तेरे घर के बाहर भी एक दिन भीड़ खड़ी हो सकती है
विश्वास रखो तुम भी बड़े होंगे और हर शाम बड़ी हो सकती है

इस सफलता की चाह में माँ बाप को याद रखना है
ज़िन्दगी में ख़ुश रखो उनकी आँखों को साफ़ रखना है
वरना सफलता बेकार हो जाएगी जरा ध्यान से सुनो
गर अपने लोग खुश ना हो , इसलिए सफलता जरा ध्यान से चुनो

- सिन्थिया
XI A

कोविद १९

दुनिया भर में कोरोना वायरस की चपेट में अभी तक 43 मिलियन लोग आ गए हैं, जिसमे से 1.15 मिलियन लोगों की मृत्यु हो चुकी है। हालांकि 29 मिलियन लोग रिकवर कर चुके हैं। यह वायरस बहुत तेजी के साथ पूरी दुनिया में फैल चुका है, परंतु चीन से एक राहत देने वाली खबर सामने आ रही है। चीन द्वारा बनाई जा रही कोरोना वायरस वैक्सीन इसी साल नवंबर तक आम लोगों के लिए उपलब्ध करा दी जाएगी। कोविड -19 में यह एक बहुत बड़ी खुशखबरी इसलिए भी है क्योंकि वैक्सीन के उपलब्ध होने के आसार अगले साल तक ही बताए जा रहे हैं परंतु चीन के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एंड प्रिवेंशन ने दावा किया है कि कोरोना वायरस की वैक्सीन इसी साल नवंबर उपबल्ध हो जाएगी।

चीन में वैक्सीन का ट्रायल अब फाइनल स्टेज में हैं। इनमें से कुछ वैक्सीन चीन के अस्पतालों में बांटी जा चुकी है। सीडीसी ने भी कहा है कि - वैक्सीन के तीसरे फेज का क्लीनिकल

ट्रायल तेज गति से हो रहा है और कोरोना वैक्सीन नवंबर और दिसंबर में आम जनता के इस्तेमाल के लिए उपलब्ध कराई जा सकती है।

चीन की फार्मास्युटिकल ग्रुप कंपनी 'सिनोफार्म' और अमेरिका की सिनोवैक बायोटेकमिलकर इमरजेंसी के उपयोग कार्यक्रम के तहत तीन टीकों को बनाने का काम कर रही है। सिनोफॉर्म ने जुलाई में बयान दिया था कि वैक्सीन तीसरे फेज के ट्रायल के बाद इसी साल पब्लिक के इस्तेमाल के लिए तैयार कर ली गई है ।

अब यह वायरस अलग-अलग लोगों को अलग-अलग तरीके से प्रभावित कर रहा है । अधिकांश संक्रमित लोगों को अलग तरह के और हल्के लक्षण दिख रहे हैं और फिर एकदम से उनकी मौत हो रही है, लेकिन यदि उनको सही समय पर सही उपचार मिल जाए तो वह अस्पताल में भर्ती हुए बिना ठीक हो जाएंगे ।

\- सुमन सेन ,VII B

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी

प्र) हीराकुंड बांध किस नदी पर स्थित है?

- महानदी, ओड़ीशा

प्र) ब्रिटिश इंडिया की राजधानी कहाँ थी?

- कलकत्ता

प्र) अंग्रेज़ो के खिलाफ भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ था?

- सन - 1857

प्र) आगरा का किल्ला किसने बनाया था?

- शाह जहां

प्र) भारत का सबसे बड़ा रेल स्टेशन कौन सा हैं?

- गोरखपुर रेल स्टेशन, उत्तर प्रदेश

प्र) भारत का सबसे बड़ा रेल ब्रिज कौन सा हैं?

- बोगीबील रेल - रोड ब्रिज, असम

प्र) भारत का सबसे बड़ा हवाई अड्डा कौन सा हैं?

- जेवर हवाई अड्डा, ग्रेटर नोएडा

प्र) भारत का सबसे बड़ा जंगल कौन सा हैं?

- वन विहार नेशनल पार्क, मध्य प्रदेश

प्र) भारत का सबसे बड़ा क्रिकेट स्टेडियम कौन सा हैं?

- मोटेरा क्रिकेट स्टेडियम, अहमदाबाद, गुजरात

प्र) भारत में सबसे लंबी ट्रेन कौन सी हैं?

- विवेक एक्सप्रेस

प्र) माउंट एवरेस्ट कहा हैं?

- नेपाल

प्र) अन्तरिक्ष में कुल कितने तारा मंडल हैं?

- 89

प्र) कौन से ग्रह सूर्य के चारों और दक्षिणावर्त घूमते हैं?

- शुक्र व अरुण

प्र) टेलिविजन का आविष्कार किसने किया था?

- जे.एल.बेयर्ड

यह क्यों ?

प्र) रेडियो का आविष्कार किसने किया था?

- जी.मारकोनी

प्र) विश्व शरणार्थी दिवस कब मनाया जाता है?

- 20 जून

प्र) बी.पी.आर. विट्ठल कौन थे?

- अर्थशास्त्री

- ईशांत चौहान, VII B

कोरोना महामारी

साल 2019-20 की है संसार में महामारी

फैल रही तेजी से ,कर रही बहुत

बरबादी ।

इस कठिन समय में फैल रहा कोरोना

वाइरस,

इसने विश्व को आतंकित किया है

और किया है बहुत अचंभित ।

सभी शीर्ष देशों में भी जिनका चहुंओर फैला है यश,

वे सभी इसकी आगोश में है और उनका हो रहा सर्वनाश ।

सर्वत्र फैली इस अदृश्य बीमारी ने कर दी है त्राहि त्राहि,

मानव द्वारा रचा गया वायरस मानव जाति की कर रहा तबाही ।

वैज्ञानिक युग में वैज्ञानिक आविष्कारों ने, अभी तक है खूब धूम मचाई

आज मानव सभ्यता को, अदृश्य ईश्वरीय शक्ति समझ में आई ।

मानव का सर्वोपरि ज्ञान विज्ञान,डस गया है मानव जाति को

मानव बहुत परेशान है पल पल कोस रहा है इस वाइरस को ।

गाँव, शहर, देश, विदेश में चारों ओर फैल रही महामारी

मानव को शंकित व क्षुब्ध देख,प्रकृति हँस रही है सारी ।

सभी लोग भयभीत, दहशत, आशंका व शंका से त्रस्तहैं

मन में गंभीर भाव, डरव व्याकुल मन शोक से संतप्त है।

हमें स्वयं को, परिवार को, समाज व देश को इस अदृश्य महामारी से बचाना है ,

घर में रहकर ही देश को इस संकट व मुश्किल की घड़ी से पार उतारना है ।

मानव जाति को सुरक्षित कर, देश की अर्थव्यवस्था को पटरी पर लाना है,

स्वच्छ रहकर, स्वस्थ रहकर, निरोग रहकर ही हमें आगे बढ़ते जाना है ।

जनता कर्फ़्यू से,लॉकडाउन से, दो गज दूरी से, हमें अमूल्य जीवन बचाना है,

निरंतर अच्छे से हाथ धोकर ,सेनेटाइजर का उपयोग कर जीवन स्वस्थ बनाना है ।

इस वाइरस के सामने हमें अपना संयम रखना है, इसका सामना करना है,

इसके लिए नियमित योग करना, स्वच्छता रखना व प्राणायाम करना है ।

हमारे प्यारे विध्यार्थी भी इस समय दे रहे हमारा साथ,

हम सब इससे मिलकर लड़ेंगे, करेंगे मानव का कल्याण ।

कोरोना महामारी से जंग हमारी लंबी है साथ ही विजयी होना संकल्पी है

सामूहिक एकता व एकजुटता की शक्ति, हम सबमें अद्वितीय है ।

सक्रिय ऊर्जा, प्रेरणा,आत्मनिर्भरता द्वारा हमें संकल्प पूर्ण करना है ,

अपनी प्रतिभा व मनोबल से निरन्तर,इस महामारी से जीतना है ।

- **श्रीमती दीपिका पांडे**

टी जी टी हिन्दी

केन्द्रीय विद्यालय वायु सेना स्थल मकरपुरा,वडोदरा

लॉकडाउन में फंसी जिंदगी

विपदा में है देश फंसा
विपदा बड़ी ये भारी है
घरों में ख़ुद को कैद करो
देश बचाना जिम्मेदारी है।
घर में तुम जो नहीं टिके
आना-जाना तुम्हारा जारी है
वक्त रहते संभल जा ए बंदे
वरना यह जानलेवा बीमारी है।
दिशा-निर्देशों की अवहेलना
यह देश के साथ गद्दारी है
घरों में ख़ुद को कैद करो
देश बचाना जिम्मेदारी है ।
देश का हो प्रधानमंत्री या
स्वास्थ्य विभाग का प्रभारी हो
नजरंदाज करने वाले आये चपेट में
चाहे वो प्रिंस चार्ल्स हो या भिखारी हो।
चीन अमेरिका हो या इटली
या फिर फारस की खाड़ी हो,
सारे विश्व में है हाहाकार मचा
यह कैसी भयावह महामारी है।
संकट से उबारने में जो भी लगे
सबका यह राष्ट्र आभारी है
घरों में ख़ुद को कैद करो
देश बचाना जिम्मेदारी है

- अमित दाश

XII-B

मजेदार रोचक तथ्य

1. डॉल्फिन मछली 5 से 8 मिनट तक अपनी सांस रोक सकती है।

2. शुतुर मुर्ग की आंखे उसके दिमाग से ज्यादा बड़ी होती हैं।

3. मेढक जब किसी कीड़ो को निगलता हैं तो उसकी आंखे बंध हो जाती हैं।

4. दुनिया में 11 प्रतिशत लोग बाएं हाथ का इस्तेमाल करते हैं।

5. अगस्त एक ऐसा महिना हैं जिसमे लोग ज्यादा पैदा होते है।

6. भालू के 42 दांत होते हैं।

7. इंसान की सबसे छोटी हड्डी कान में होती हैं।

8. शहद अकेला ऐसा प्राकृतिक पदार्थ है जो कभी खराब नहीं होता।

9. औसतन इंसान के दिमाग में 78 प्रतिशत पानी होता हैं।

10. विश्व की सबसे अधिक कॉमन इस्तेमाल होने

सकारात्मकता जीवन का मूल मन्त्र

७. पढ़ो, लिखो, लड़ो, हासों, रोओ कुछ भी करो और सब कुछ करो, मगर जो सपना देखा हैं हार हाल में उसे पूरा करो।

८. जीवन में कुछ बड़ा मिल जाये तो छोटे को मात भूल जाना क्योंकि जहाँ सुई काम आती हैं वह तलवार नहीं चलाये जाते।

९. खुद से सवाल करोगे तो सरे जवाब मिल जायेंगे, मार्ग दुसरो से सवाल करोगे तो और उलझते चले जाओग। आपको आपसे बेहतर कोई नहीं जान सकता।

१०. सकारात्मक सोच के साथ आपको हार मुश्किल आसान लगेगी और नकारात्मकता के साथ हार आसान काम भी मुश्किल लगेगी।

समझदारो के पास हार मुश्किल का समाधाम होता हैं और नासमझ के पास हार समाधान का मुश्किल रूप।

नाम समीम खातून

कक्षा ११ ब

१. जहाँ तक रास्ता दिख रहा हैं वह तक चलो, आगे का रास्ता वहाँ तक पहुँचने के बाद दिख जाएगा, आप आपने मंज़िल पर ध्यान रखे रास्ता अपने आप बनता जायेगा।

२. भाग्य से जितना अधिक उम्मीद करोगे वह तुम्हें उतना निराश करेगी मगर कर्म में जितना विश्वास रखोगे वह उतना ही आपके उम्मीद से अधिक देगा।

३. सोच अच्छी होनी चाहिए क्योंकि नज़र का इलाज हो सकता हैं पर नाजारये का नहीं, आप अपनी सोच पर काम करे बाकि काम आपने आप अच्छे बन जायेगा।

४. पत्थर में कमी एक ही होती हैं, की वो कभी पिघलता नहीं हैं लेकिन यह उसकी खूबी हैं की वह कभी बदलता नहीं हैं।

५. सफलता के रास्ते बनते नहीं हैं बनाने पड़ते, और बोलने से कुछ नहीं होता कारनामे कर के दिखने पड़ते हैं।

६. सफलता भी फीकी लगती हैं, यदि कोई बधाई देने वाला न हो, और असफलता भी खूबसूरत लगती हैं जब आपके साथ कोई अपना खड़ा हो।

प्रकृति

प्रकृति है देव स्वरूपा, प्रकृति है सदा मनभावनी।
लालन-पालन सबका करती, अति सुंदर
लुभावनी।

सबके उपयोग में है आती, जीवन रेखा खूब
बढ़ाती।
बिन माँगे कितना कुछ देती, ये है खूबसूरत
सुहावनी ।
कहीं फूल-फल वादियाँ, कहीं हरीतिमा की
चादर ।
प्रकृति में बसने वालों की, जीवन-रेखा
संभालनी ।
काल चक्र सूरज से रोशन, रात में शीतल चाँदनी।
भूमिगत जल प्यास बुझाए, हवा चलाती सरसावनी।
कहीं रेत से रेगिस्तान, रिमझिम बारिश की शान ।
कहीं नदियाँ और ताल, कहीं गहरी खाई डरावनी ।
कहीं बाढ़ कहीं सूखा, कहीं महामारी का प्रकोप ।
जब कभी धरती हिले, भूकंप प्रलय की दायिनी ।

मानव इसका उपयोग करें, तब कोई
एतराज नहीं ।
जड़-चेतन पर शोध हो रहा, प्रकृति
तभी फलदायिनी।
पशु-पक्षियों को भी इस मौसम से
रहती है आस।
बारिश में इंद्रधनुष, बच्चों की खुशियाँ हर्षावनी ।
मानव विकास में सीमा तोड़े, ये इसको मंजूर नहीं।
उद्दंडता के कर्म न करो, बेवजह न घेरो प्रकृति की छावनी ।

-श्रीमती त्रिवेणी शाक्यवार
पी जी टी (हिंदी)

एक सोच : युगपुरुष महात्मा गांधी

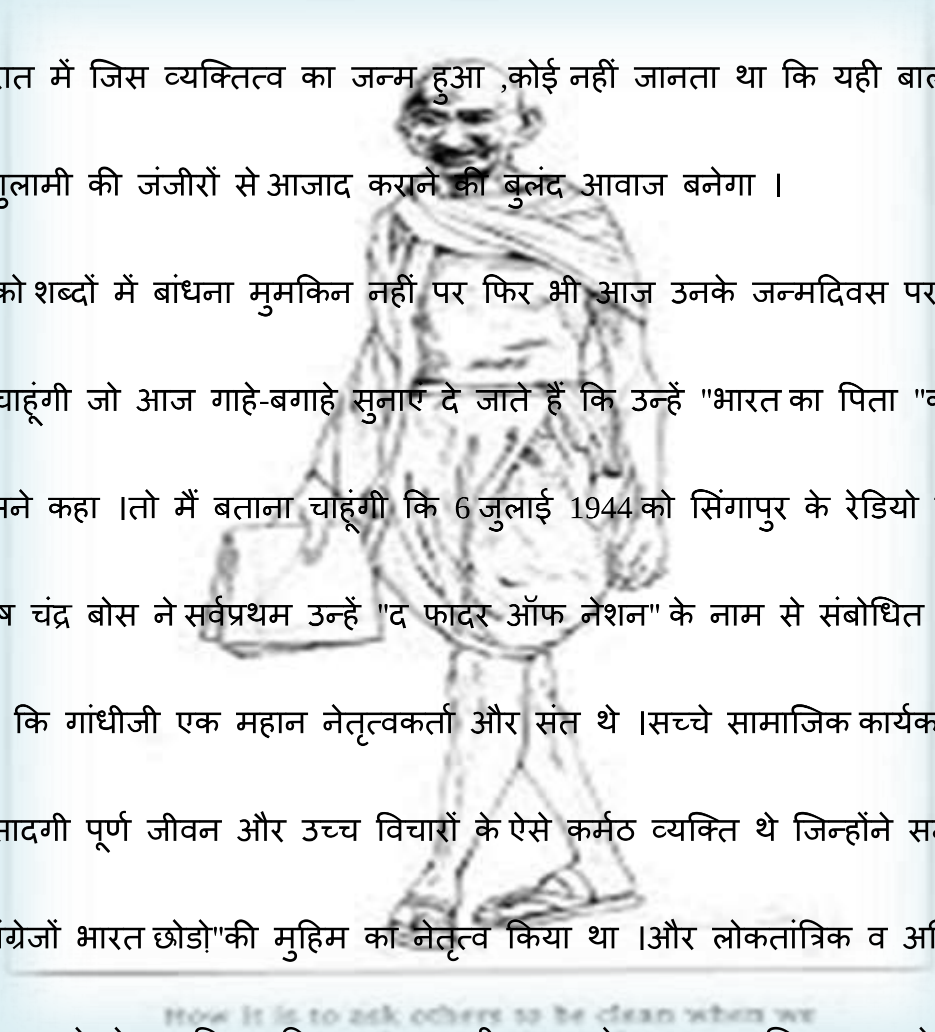

1920 से 1947 का समय भारतीय इतिहास में" गांधी युग" के नाम से जाना जाता है। 2 अक्टूबर 1869 में पोरबंदर ,गुजरात में जिस व्यक्तित्व का जन्म हुआ ,कोई नहीं जानता था कि यही बालक देश को सदियों से जकड़ी गुलामी की जंजीरों से आजाद कराने की बुलंद आवाज बनेगा ।

उनकी जीवनी को शब्दों में बांधना मुमकिन नहीं पर फिर भी आज उनके जन्मदिवस पर कुछ सवालों के जवाब देना चाहूंगी जो आज गाहे-बगाहे सुनाए दे जाते हैं कि उन्हें "भारत का पिता "क्यों कहा जाता है और किसने कहा ।तो मैं बताना चाहूंगी कि 6 जुलाई 1944 को सिंगापुर के रेडियो से अपने संबोधन में सुभाष चंद्र बोस ने सर्वप्रथम उन्हें "द फादर ऑफ नेशन" के नाम से संबोधित किया था क्योंकि वे जानते थे कि गांधीजी एक महान नेतृत्वकर्ता और संत थे ।सच्चे सामाजिक कार्यकर्ता, सत्यव्रती, धार्मिक थे। सादगी पूर्ण जीवन और उच्च विचारों के ऐसे कर्मठ व्यक्ति थे जिन्होंने समस्त देश को एकजुट कर" अंग्रेजों भारत छोड़ो"की मुहिम का नेतृत्व किया था ।और लोकतांत्रिक व अहिंसक तरीके से अंग्रेजों को भारत छोड़ने पर विवश किया था,साथ ही समय के साथ आधुनिक भारत के नींव डालने का कार्य किया था ।

रविंद्र नाथ टैगोर ने सर्वप्रथम उन्हें महात्मा का दर्जा दिया था जबकि दोनों ही गांधीजी के अहिंसक रवैये को पसंद नहीं करते थे पर फिर भी उनकी इज्जत और उनके कार्यों को सम्मान करते थे और यही सुंदरता थी उस समय के आजादी के कर्म वीरों की जो आज के भारतीयों में नहीं देखी जा सकती जो गांधी जी की इतनी आलोचना करते हैं।

गांधी जी ने कांग्रेस शब्द क्यों लिया यह भी सब नहीं जानते "कांग्रेस" का शाब्दिक अर्थ" द सोशल ऐक्ट ऑफ असेंबलिंग फॉर सम कॉमन परपज" है। "इंडियन नेशनल कांग्रेस" की स्थापना का मुख्य मकसद संपूर्ण भारतवर्ष को एक ही महान उद्देश्य "आजा़दी" के लिए एकत्रित करना था,जो उन्होंने सफलतापूर्वक प्राप्त किया था ,पर दुर्भाग्य है देश के उन संकीर्ण सोच का जो आज उनकी बुराइयां ढूंढ ढूंढ कर उनसे नफरत की बात करता है। बिना गांधी को जाने उनके बारे में अनाप-शनाप बोलता है।

यह सही है कि देश की आज़ादी में बहुत से स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने अपने तरीके से लड़ाई लड़ी थी कुछ बहुत कम उम्र में शहीद भी हुए थे पर राजनैतिक और कूटनीति से लंबे समय तक इस लड़ाई को लड़ना ज़रूरी था जो बौद्धिक क्षमता से संभव था ना कि जोश में आकर होश खो देंने से। उस वक्त देश की स्वतंत्रता की लड़ाई में "मतभेद "तो थे पर "मनभेद "नहीं थे और संपूर्ण देश अपने अपने तरीके से लड़ा और विजयी भी हुआ पर आज के भारतवासी जिस तरह से कुछ स्वतंत्रता सेनानियों पर उंगलियां उठाते हैं उससे उनकी संकीर्ण सोच और निम्न मानसिकता का बोध होता है।

भारत के उस महान व्यक्ति को जिसे आज के संदर्भ में भारत के बाहर विश्व में दिल से ज़्यादा सम्मान मिलता है को याद करके नमन करती हूँ।

- **डॉ. तरूणा माथुर**

टी.जी.टी. कला शिक्षा

ENGLISH SECTION

NO.	PARTICULAR	NAME

CONTENTS

1	AMAYA	THOOYA PRASANTH
2	MOON MY FRIEND	PURVI SINGH
3	MY EYES	THOOYA PRASANTH
4	LAUGH A BIT	SAKILA
5	TRUST	RISHIKA SINGH
6	CIVID19: MORE ABOUT IT	DIVYAJYOTI PATRA
7	INTERESTING FACTS	AKASH MISHRA
8	EXPECTATIONS	RISHIKA
9	THE YEAR OF 2020	ROOPA RAVALI
10	EASY PEASY LEMON SQUEASY	THOOYA P.
11	LET IT FLOW	RISHIKA
12	7 SECRETS	MANASVI KAGRA
13	AGAIN AND AGAIN	MANASVI KAGRA
14	COMPUTER SCIENCE ABBREVIATIONS	MANASVI KAGRA
15	DID YOU KNOW	PRAKASH
16	NO MATTER	RISHIKA
17	COSMETICS	GUNJAN ARYA
18	RAIN	AMAR SHIGH
19	AMAZING FACTS	ABHISHEK
20	WOMAN EMPOWERMENT	ANIL KUMAR

Story

AMAYA

Once there was a girl named Amaya. Amaya's father was a vegetable vendor and her mother did household work in some houses. Since they were a poor family Amaya could not go to school. Amaya was a kind, bright child and she longed to go to school like all the other children.

Every day, Amaya woke up and got ready to go with her mother to help her at work. Her father left for work at the local market by that time. One day, they first went to the house of a boy called Narayan. Amaya started sweeping the floor and her mother went about washing the dishes. After finishing all the work they swept the garden. Amaya's mother also worked at Minister Govind's house, which was very close to their house. Minister Govind had a little daughter named Arya. Amaya and Arya were good friends. Arya talked with Amaya while she was working. Amaya was washing dishes in the kitchen while chatting with Arya who was sitting on the open window sill. Arya's favourite gold and silver coloured ribbon which she wore on her head flew away in the strong breeze but Arya didn't notice as she was speaking to Amaya. Arya realized that her ribbon was missing and searched all over the house. Amaya also helped her search for some time but went home with her mother as it was time for dinner.

Amaya's father had also returned home from the market. Her mother made dinner and the family ate happily. While Amaya was resting a strong breeze was blowing. Amaya looked out of the window and she saw a gold and silver ribbon fluttering in the wind while stuck on a bush outside her house. She knew right away that it was the same ribbon that Arya had lost. Amaya went out of the house and started running behind the ribbon, which had now come lose and was being blown away by the wind. While she was running behind the cloth she entered a grave yard and she felt very scared. The ribbon was now stuck on a branch of a dead tree. Amaya managed to climb it and at last she reached the right branch. But a strong wind blew again and it took the ribbon away, again.

Amaya climbed down the tree and followed the cloth. Amaya didn't really know where she was going as it was very dark. Suddenly, "SPLASH"! She fell into a pond, but she swam towards the ribbon and grabbed and climbed onto the bank of the pond. She then went back home and dried herself and kept the ribbon in her cupboard. The next day she went to Arya and told what had happened last night. Arya was very happy and told this to her father. Minister Govind was surprised that this little girl had gone through so much trouble just to make his daughter happy. He decided to help Amaya go to school and told this to Amaya and her parents. Now Amaya and Arya are not just friends but also classmates and lived happily.

By- Thooya Prashanth

IV A

Poem

MY EYES

My eyes are good, My eyes are great,
When I am late, it looks at the time.
When I smile my eyes are open wide.
Oh my eye!
When I meet someone new, my eyes feel shy.
Oh my eye!
Tell me why? Why are you so brilliant?
My eyes can look at an elephant.
Oh my eye!
My eyes are good! my eyes are great!
Let's sing along mates☺

By -Thooya Prashanth
4 A

Moon My friend

The moon's amazing sizzling charm,

Inducts me to take it to my arm,

With a tight hug giving warm,

Making me forget all the storm.....

In this very beautiful night,

It's really wonderful sight,

With the ray of amazing light,

You have taken my heart

To great new height….

By-Purvi singh

Trust

No one can harm you without

LAUGH A BIT

Where do cows go on Friday?

- They go to moooovies.

Article

Covid-19: More about it

This Year hasn't been short of surprises, and it started with the spreading of "CoronaVirus' ' throughout the world like a social media trend. The name CORONAVIRUS is the name of the Family which consists of 108+ various viruses. Actually SARS Cov-2 is the real name of this virus and it is the predecessor of 2002 SARS COv. And COVID-19 is the name of disease, not the virus! This Virus's origin is Wuhan, China.

I had read somewhere that it started to spread from the person who ate Bat soup. It is a fact that all the pandemic causing viruses came from animals and got transmitted to humans due to meat consumption, let it be Bird-Flu, Mad Cow, SARS COv, MERS, TBT, Smallpox, Spanish-Flu, Ebola, H1N1 and many more, so it clears one thing that, "consumption of meat should be precisely zero for a human body". Otherwise, we have to pay it with our lives someday.

Now moving towards the Bat Soup theory: This theory is considered because in 2016, The Corona Virus which was found in a bat is very similar to this Virus. They are not totally from bats but might have mutated due to consumption by a human, but we got one more theory as well which is more of a malevolent intent that Wuhan virology lab prepared it by artificially doing some genetics with help of Pangolin Animal, to shatter, maybe the global economy.

Currently The whole world is in a race of formulation of vaccines. Every scientist and doctor is trying their level best. Till then we must follow Covid-19 Protocols by the Government. Even with these things happening, life and time are still going on. So consider that Life is a show and One Famous guy once said:-

"THE SHOW MUST GO ON".

-Divyajyoti Patra, XII-A

Some Interesting Facts About Human body

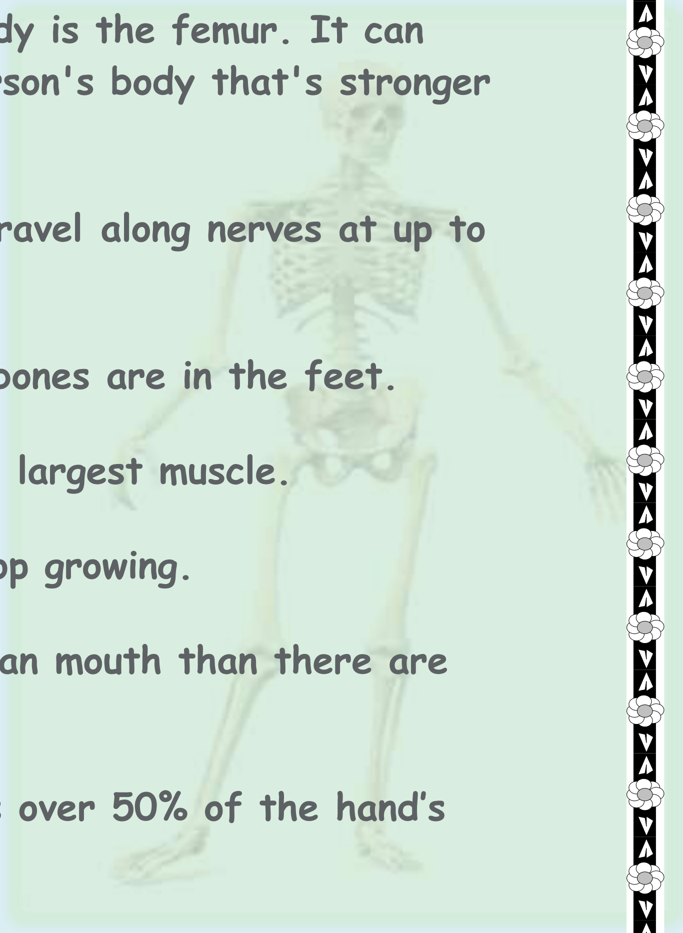

1. The largest bone in the human body is the femur. It can support 30 times the weight of a person's body that's stronger than steel.

2. Messages from the human brain travel along nerves at up to 200 miles an hour (322 km/h).

3. In an adult human, 25% of their bones are in the feet.

4. The gluteus maximus is the body’s largest muscle.

5. A human’s ears and nose never stop growing.

6. There are more bacteria in a human mouth than there are people in the world.

7. A human’s little finger contributes over 50% of the hand’s strength.

8. If a human being’s DNA were uncoiled, it would stretch 10 billion miles, from Earth to Pluto and back.

9. Within three days of dying, the enzymes that digested a person’s food will begin to digest that person’s body.

10. For an adult human, taking just one step uses up to 200 muscles.

11. A human skeleton renews itself completely every 10 years.

12. By the time a person reaches 70 years old, he or she will have consumed over 12,000 gallons of water.

-Akash Mishra
XI 'B'

Expectations

Expectations hurt;
So does the fear of failure.
In the deep and dark oceans of expectations and failure;
There still exist a barque
Barque called life.
During the worst of storms;
A traveller doesn't give up
He travels, travels for the light of life
No doubt, not meeting expectations does hurt
But that doesn't call for a QUIT
If you dare to expect;
And let people have expectations.
If you have what it takes;
What it takes to achieve
Then you have what it takes to LIVE
Just like a traveller in the worst of storms;
Just like a small barque in the dark oceans;
You can't give up
Because the darkness won't hover forever
Nor will the storm

- Rishika Singh
XI B

THE YEAR OF 2020

I have dreamt for days where I would not have to wake up at 6 in the morning to get ready and go to school instead just unwind but little did I know that my dream would soon come true but am I enjoying 'THE' dream now? Not quite.

Usually it used to take me quite a bit of time to get ready for school but now I wake up 15 minutes before the class starts and all I do is log into my computer and that is it my class begins with a touch of a button {never thought we would come down to this}.For the first few days e-learning was fun as I had a lot of free time on my hand so I could do things that I wasn't able to do during school time. We have breaks in between different lectures but instead of sitting together and eating with my classmates; I go to my kitchen to eat my meals. But things have been quite tenacious as studying online is not easy at all; we are given more assignments, tests, shorter deadlines, etc. and learning online is very different from face to face interactive learning.

As the lockdown prolonged I started to miss my school, teachers and most of all my friends! It made me realize how I took the world for granted. But on the contrary this lockdown period has taught me to appreciate nature and be patient.

These past few months have been extremely fruitful for some while brutally draining for others. Though people have been extremely constructive and have been trying to cope up with the increasing competition that is coming their way sometimes it's ok to stop what you are doing and take a break. We all need to understand each and every person in this world is new to this pandemic no one in a billion years has gone through something like this hence everyone has a different approach towards this problem. We need to remember we are in this together and times like this look for reconciling old lost friendships,

spending quality time with your families. I guess this is the universe's way of telling to slow down and take a break from the usual hustle bustle. Though I do wish we could go back to our normal lives where we did not have to do virtual birthday parties, sanitize everything we touch and most importantly wear masks to even go for a walk. But I keep reminding myself as a mantra- "This Too Shall Pass".

-By Roopa Ravali
XII B

Drawing competition on occasion of Dr. B.R. Ambedkar Birth Anniversary

Drawing competition on COVID19

Easy-Peasy-Lemon Squeaz

Once there lived two witches Perol and Emma. They were good witches because they helped everyone. One day a little girl was trapped in a cage. Perol and Emma saw this and helped the little girl, get out of the cage and asked "How did you get into this cage?" The girl answered "when I was returning home suddenly from nowhere a cage fell on me". Then Perol said to Emma "It must be Teki". So they felt that it was Teki who did this. Perol and Emma then read books from which they learnt that even the weak witches can try to change the powerful ones.

So they learnt the spell which was in the books. They went to the tower where Teki lived. Then Perol who was good at mimicry shouted in a furious voice "Teki! come out, you cruel creature". Hearing the loud angry voice, Teki, who was in the tower, got scared. She said in a trembling voice "Who is out there?" The furious voice asked "Why do you always trouble people? You need to be punished". Then suddenly from nowhere a cage fell on Teki and she cried "let me out, let me out". "Never" said the furious voice. Kind Perol and Emma let Teki out after an hour. Teki was happy to be outside the cage. Then Perol and Emma said the spell together "Easy- Peasy – lemon – squeazy. Lo behold!" A miracle happened, Teki turned into a good witch too. Now Perol Emma and Teki live together and they all help everyone. All thanks to Emma and Perol.

MORAL: Good begets good !

By-Thooya Prashanth
IV A

Let it flow

O! Let it flow
Like a drizzle at dawn;
Like diamonds on skin;
Like pearls in serene emerald sea.

O! Let it flow
The burden that you've been carrying;
The raindrops that you've been holding;
There are clouds in all skies.

O! Let it flow
Because it's not just you;
There are others too.
The sufferers are different;
But the sufferings are similar.

O! Let it flow
I know you see clouds;
I see them too;
But ironically we are confined to our own skies.

O! Let it flow
I understand life;
Although you shall then complain,
"You've got no clue
What I've been through"
To which I would say;
I am not Almighty
To know your sky in complete detail;
None have I painted,
The clouds in your sky.

But being a puppet;
Of a similar sky;
I would say
O! Let it flow.

- Rishika Singh
XI B

7 Secrets of Success
I found the Answer in my room

- Roof said – Aim high
- Fan said- Be cool
- Clock said- Every minute is precious
- Mirror said – reflect before act
- Window said- See the world
- Calendar said- Be up to date
- Door said- Push hard to achieve your goals

Compliled by - Manasvi Kagra, V A

Again & Again

Pass or fail
Doesn't matter
If we try and try
If we try and try again
Nothing is impossible
If we think
Luck & labour
Both are needed
To face the compulsion
In an easy way
It is truly said
Take out the word impossible
And write and try instead
In a way achieve any goal
You try , try and try again

Compiled by- Manasvi Kagra
Class V A

Computer Science Abbreviations

❖HTML- Hyper Text Markup Language

❖HTTP- Hype Text Transfer Protocol

❖JPEG- Joint Photographic Group Experts

❖JPG- Joint Photographic Group

❖CSS –Cascading Style Sheet

❖FAF- Frequently Asked Format

❖PNG- Portable network Graphics

❖GIF-Graphics Interchange Format

❖WWW- World Wide Web

❖ISP- Internet Service Provider

❖IIS- Internet Information Service

❖DNS- Domain Name Service

❖FTP- File Transfer Protocol

❖XML- Xtensible Markup Language

❖B2B – Business to Business

❖B2C- Business to Customer

❖C2C- Customer t Customer

❖G2 B -Government to Business

❖G2C- Government to Customer

❖G2C Government to Citizen

❖ EDI- Electronic Data Interchange

Compiled by- Manasvi Kagra
V A

- There are almost 200000000 insects on every human being.
- An eyeball weighs about 1ounce.
- Bamboo can grow up to 3 Ft in 24 Hours.
- Human Body has 2-3 million sweet glands.
- Sharks can live up to 100 years.
- Mosquitoes are more attracted to Blue colour than other colours.
- The largest known snow flake was 15 inch wide & 8 inches thick. It fell in Montana in 1887.
- Rhythm is the longest word in English without a vowel.
- A snail sleeps for three years.
- In the last four thousand years, no new animal has been domesticated.
- The ants pass over on the right side always when intoxicated.
- Star fish does not have brain.
- An Ostrich's eye is bigger than its brain.
- The colour of Coca was originally green

Compiled by- Prakash
Class- VII B

No Matter…

No matter how hard you try ;
You can't forget your past.
No matter how hard you try ;
You will always end up hurting people you love.
No matter how hard you try ;
You will be hurt.
No matter how open you are ;
There will always be a part of you undiscovered.
No matter how much you try ;
You can't forget your blunders.
No matter how hard you try ;
There will always be a night when you are alone, crying
And trying to find someone to console you.
But Alas! In vain
But you can certainly do one thing
Live with it.
Accept it.
Try not to repeat it.
Try to be strong,
Strong enough to wipe your own tears.
But for sure,
You can't forget your past ;
No matter how hard you try.

- Rishika Singh, XI B

Cosmetics

For your tips – Truth

For your voice – Prayer

For your eyes – Sympathy

For your hands – Charity

For your heart – Love

For your face – Smile

- Gunjan Arya, VA

Rain

Rain is falling on the ground
Which makes a tip top sound.
Its natural ,it is so beautiful.
There is no heat, everywhere is cool.
The trees are growing with the flowers.
The peacock started dancing under the shower.
I want a paper to make a boat,
By sailing it I enjoy a lot.
Farmers get water for their crops,
It stored in earth drops by drops.

by- Amar Singh Sehrawat
Class- XI C

- If you unbound some large spider-webs the silk would stretch for nearly 480 km.
- The world’s tallest woman is Sandy Allen. She is 2.35 Meter (7.7 ft)
- ‘Almost’ is the longest word in the English language with all the letters in alphabetical order.
- The people take around six months to take food equal to weight of body.
- A honey bee moves around 90 thousand km to collect 1 kg of honey.
- The ant does not sleep any time.
- In history the smallest war was between Jhanjhiban and England in1896. The war was over in 38 minutes.
- When a person lies on bed, s/he sleeps in 7 minutes.
- A big record for flying kite is for 180 hours.

Compiled by- Abhishek

Class-IX

Women Empowerment: A Reality

The subject of empowerment of women has becoming a burning issue all over the world including India since last few decades. Many agencies of United Nations in their reports have emphasized that gender issue is to be given utmost priority. It is held that women now cannot be asked to wait for any more for equality. Inequalities between men and women and discrimination against women have also been age-old issues all over the world. Thus, women's quest for equality with man is a universal phenomenon. What exists for men is demanded by women? They have demanded equality with men in matters of education, employment, inheritance, marriage, politics and recently in the field of religion also to serve as cleric (in Hinduism and Islam). Women want to have for themselves the same strategies of change which menfolk have had over the centuries such as equal pay for equal work. Their quest for equality has given birth to the formation of many women's associations and launching of movements.

The position and status of women all over the world has risen incredibly in the 20th century. We find that it has been very low in 18th and 19th centuries in India and elsewhere when they were treated like 'objects' that can be bought and sold. For a long time women in India remained within the four walls of their household. Their dependence on menfolk was total. A long struggle going back over a century has brought women the property rights, voting rights, an equality in civil rights before the law in matters of marriage and employment (in India women had not to struggle for voting rights as we find in other countries).

In addition to the above rights, in India, the customs of purdha (veil system), female infanticide, child marriage, sati system (self-immolation by the women with their husbands), dowry system and the state of permanent widowhood were either totally removed or checked to an appreciable extent after independence through legislative measures. Two Acts have also been enacted to emancipate women in India. These are: Protection of Women from Domestic Violence Act, 2005 and the Compulsory Registration of Marriage Act, 2006. The Domestic Violence Act recognizes that abuse be physical as well as mental.

Anything that makes a woman feel inferior and takes away her self-respect is abuse. Compulsory Registration of Marriage Act can be beneficial in preventing the abuse of institution of marriage and hindering social justice especially in relation to women.

It would help the innumerable women in the country who get abandoned by their husbands and have no means of proving their marital status. It would also help check child marriages, bigamy and polygamy, enable women to seek maintenance and custody of their children and widows can claim inheritance rights. The Act is applicable on all women irrespective of caste, creed or religion. It would truly empower Indian women to exercise their rights. To what extent legislative measures have been able to raise the status of women in India? Are women now feel empowered in the sense that they are being equally treated by men in all spheres of life and are able to express one's true feminine urges and energies? These are the important questions to be investigated with regard to women's empowerment in India.

We all know that girls are now doing better at school than boys. The annual results of Secondary and Higher Secondary Board examinations reveal this fact. More women are getting degrees than men, and are filling most new jobs in every field. Women are playing bigger and bigger role in economic field: as workers, consumers, entrepreneurs, managers and investors. According to a report of The Economist, 'Women and the World Economy', in 1950, only one-third of American women of working age had a paid job.

Today, two-thirds do, and women make up almost half of American's workforce. In fact, almost everywhere, including India, more women are employed, though their share is still very low. Manufacturing work, traditionally a male preserve, has declined, while jobs in services have expanded, reducing the demand for manual labour and putting the sexes on equal footing.

We can now see women in almost every field: architecture, lawyers, financial services, engineering, medical and IT jobs. They have also entered service occupations such as a nurse, a beautician, a sales worker, a waitress, etc. The rapid pace of economic development has increased the demand for educated female labour force almost in all fields. Women are earning as much as their husbands do, their employment nonetheless adds substantially to family and gives family an economic advantage over the family with only one breadwinner. This new phenomenon has also given economic power in the hands of women for which they were earlier totally dependent on males. Economically independent women feel more confident about their personal lives. Hence, they are taking more personal decisions, for instance, about their further education, marriage, etc. More and more women want freedom of work and control their own reproduction, freedom of mobility and freedom to define

one's own style of life. It is contended that freedom leads to greater openness, generosity and tolerance.

Economic independence of women has also affected the gender relationships. New forms of gender relationships (live-in relationship is challenging the long-rooted conception of marriages as a permanent arrangement between families and communities. A new pattern is emerging in which both partners work outside the home but do not share equally in housework and child care as we see in Western families. In India, the paternalistic attitude of the male has not undergone much change. In spite of such drawbacks and hurdles that still prevail, Indian women (especially educated) are no longer hesitant or apologetic about claiming a share and visibility within the family, at work, in public places, and in the public discourse.

(Based on an essay by Pujal Mondal)

- Anil Kumar
KV AFS Makarpura,
Vadodara

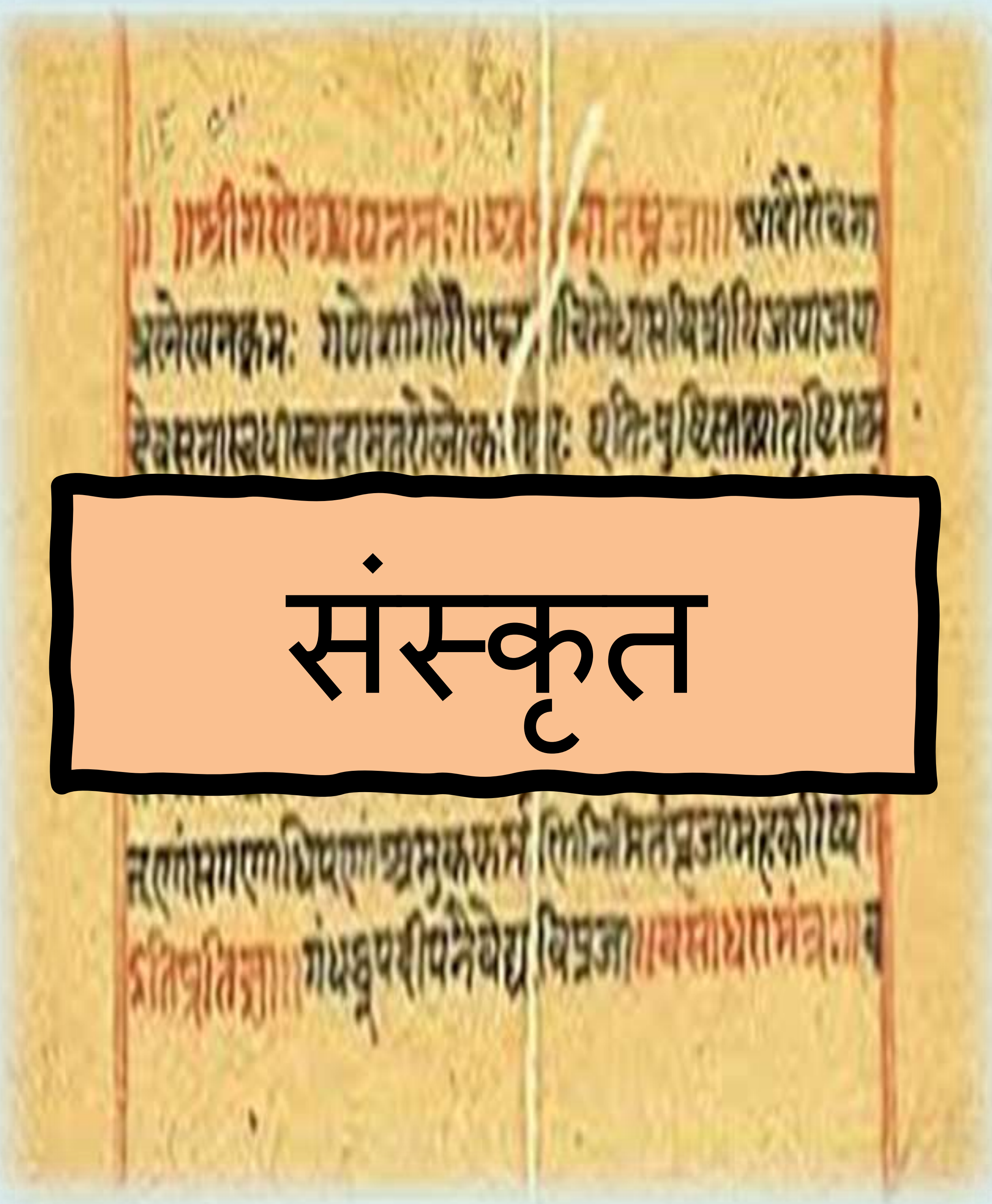

संस्कृत

अनुक्रमणिका:

क्र.	विषय	नाम
१	मातृभूमि:	आर्यावर्त गुप्ता
२	परिश्रमस्य: महत्वम्	रिया दीपक कुमार भूत
३	विद्यालय- वार्षिकोत्सव:	रिया दीपक कुमार भूत
४	विद्यार्थी जीवनम्	बैभवी
५	देवभाषा संस्कृतम्	तनिष्का राउतराय
६	भारतीय संस्कृति:	रिया दीपक कुमार भूत
७	सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्	निकुंज कुमार

मातृभूमि:

मातृभूमिः सर्वदा पूज्या रक्षणीया भवति ।भारत - भूमिः अस्माकं मातृ - भूमिः अस्ति ।जन्मभूमिः अस्माकं जननी अस्ति ।यथा माता पूज्या भवति तथैव जन्मभूमिः अपि वन्दनीया भवति। मातृभूमिः स्वर्गादपि श्रेष्ठा भवति ।मातृभूमौ वयम् सुखेन निवसामः क्रीडामः च। हिमालयः अस्याः शुभ्रमुकुटम् इव शोभते ।दक्षिणे सागरः चरणौः प्रक्षालयति ।निज मातृ - भूमिः सर्वेषाम् एव प्रियतमा भवति ।

- आर्यावर्त गुप्ता
षष्ठी 'अ'

परिश्रमस्य महत्त्वम्

उद्यमेन हि सिध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः ।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ।।

जन्मना कश्चित् कीदृशोऽपि महान् स्यात् परन्तु, यदि सः सर्वाणि कार्याणि परित्यज्य केवलमालस्यपरिगृहीत एव यापयति दिनानि, तदा स उन्नति नाप्नोति । तेन यत् पूर्वजेभ्यः प्राप्त तदपि शनैः शनैः नश्यति । वनराजो मृगराजोऽपि यदि उद्यमं विहाय वने तिष्ठेत्, तर्हि अयमस्माकं राजेति विचार्य स्वयमेव कश्चित् पशुः तस्य मुखग्रासो भवितुं नार्हति । अत एवोच्यते 'न परिश्रमसमो बन्धुर्न चालस्यसमो रिपुः' इति । एतदाभाणकं शतशः सत्यमस्ति। यदि अस्माकं सर्वे बन्धवो वियुज्येरन्, पराङ्मुखा वा भवेयुः न कश्चित् साहाय्यं कुर्यात्, तदापि यदि परिश्रमं न वयं त्यजामस्ताह न केवलं लुप्तं धनं यशो वा प्राप्तुं समर्था अपितु नवमधिकं च धनं यशश्चार्जयितुं समर्थाः । मृत्पिण्डबुद्धिना बोपदेवेनापि परिश्रमद्वारैव महती विद्योपाजता, विद्वान् वैयाकरणोऽसौ जातः सम्मानितश्च लोके। ये पुनः विभववन्तो जनास्ते हि बन्धुबान्धवयुता अपि यदि आलस्यपरिगृहीताः स्युः तदा सर्वस्तेषां विभवः पश्यतामेव नश्यति । कि वाऽभूत् आलस्यमूर्तेरग्निवर्णस्य ? तस्य इक्ष्वाकुवंशागतं राज्य परैरपहृतमालस्यकारणादेव । आलस्यकारणादेव च पश्यति, शासकैर्भारते मुगलसाम्राज्यमवपातितम् । परिश्रमेण एव आङ्गलैः निखिलविश्वे साम्राज्य स्थापितम्।

सर्वस्य इतिहासस्य कथैव परिश्रमकथा इति शक्यते वक्तुम् । न चेदभविष्यत् परिश्रमो गान्धितिलकसुभाषसदशानां नेतृणां कथनभविष्यत् भारतं स्वतन्त्रम् ! विद्यार्थिभिरपि सोद्यमैरेव न केवलं परीक्षायामपितु सकलजीवने एव साफल्यमधिगम्यते । प्रकृत्यामपि परिश्रमस्योदाहरणानि दृश्यन्ते । लघुपक्षिणोऽपि परिश्रमेण नीडानि निर्माय वर्षाकाले शीतकाले च सुखं वसन्ति । अतिलघ्वी पिपीलिका सर्वदा परिश्रमनिरता दृश्यते न सा कदापि विश्राम्यति । सा च सर्वेष कालेषु बिलेष सुख निभृता सती संगृहीतमन्न भक्ते न च क्षयं याति । अत एव साधूक्तं केनचित् कविता-'आलस्यं हि 'मनुष्याणां शरीरस्थो महान् रिपुः' इति । वेदेषु प्रोच्यते–कृतं मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः इति । यः सपरिश्रम कार्यं करोति स एव जयति । तथैवोच्यते-इन्द्र इच्चरतः सखा इति । यो जनः चरति कार्यं वा करोति तमेव परमेश्वरः कामयते । परिश्रमेण श्रान्तेन जनेनैव लक्ष्मीः प्राप्यते इति 'नानाश्रान्ताय श्रीरस्ति' इत्यस्मिन् आभाणके उक्तं भवति । तथैव चाह ऋषिः-न ऋते श्रान्तस्य सख्याय देवाः इति । परमेश्वरोऽपि तस्य साहाय्यं करोति यः स्वयं परिश्रमशीलः स्यात् । सर्वेषु क्षेत्रषु परिश्रमः आवश्यकः । परिश्रमशीलो जनः किमपि काय गहतं न मन्यते । तस्य तु परिश्रमे एव निष्ठा च प्रतिष्ठा च।

- रिया दीपक कुमार भूत
VII B

विद्यालय - वार्षिकोत्सवः

प्रतिवर्ष विद्यालयस्य वार्षिकोत्सवो महतोत्साहन आयोज्यते । तत्राध्यक्षतार्थं कश्चिद्विशिष्टो राजनेता वा उच्चाधिकारी वा शिक्षाविद् वा निमन्त्र्यते । वार्षिकोत्सवाद् बहुदिवसपूर्वमेव प्रधानाचार्यसहिताः सर्वे अध्यापकाः सर्वाः अध्यापिकाश्च बहुविधा: सज्जा: कुर्वन्ति, छात्राः अपि सर्वेषु कार्येषु सहयोगं कुर्वन्ति। सर्वत्र स्वच्छता क्रियते, विद्यालयस्य पताकाभिः सुन्दरैः वाक्यपटैश्च शृङ्गारो भवति।

वार्षिकोत्सवावसरे छात्रा: स्वच्छवेषेण आगत्य सभाभवने शान्ता उपविशन्ति । पूर्व छात्रा मङ्गलाचरणमुच्चारयन्ति राष्ट्रगीतं च गायन्ति। मुख्यातिथये माला: अर्घ्यन्ते, तदा करतलध्वनिर्भवति ।

प्रधानाचार्य:/प्रधानाचार्या विद्यालयस्य उपलब्धय:, छात्राणां विशिष्टा योग्यता: सफलताश्च वर्णयति। छात्रा: तत् श्रुत्वा हृष्टाः करतलध्वनि कुर्वन्ति। तदैकैकश: छात्रा:

पुरस्कारप्राप्त्यर्थं नाम्ना आहूयन्ते। कमशः मञ्चम् आगत्य छात्राः मुख्यातिथिहस्ताभ्यां पुरस्कारान् प्राप्य प्रसीदन्ति, सर्वे/ सर्वाः प्रोत्साहनाय करतलध्वनि कुर्वन्ति वारं वारम्। प्रथमं शैक्षिक विशिष्टतापुरस्काराविं तीर्यन्ते , तत्पश्चात् साहित्यिक सांस्कृतिक पुरस्काराः अन्ते च कीडा पुरस्काराः राष्ट्रीय छात्रसेना पुरस्काराश्च वितीर्यन्ते। छात्रेषु अपूर्व उत्साहो दृश्यते । छात्राणां समूहगानं नाट्याभिनयो वा भवति । सर्वे तं कार्यक्रमं दृष्ट्वा भृशं प्रसीदन्ति।

अन्ते च मुख्यातिथिमहोदयः अध्यक्षीयभाषणार्थं प्रधानाचार्येण/ प्रधानाचार्यया प्राथ्यते । कार्यक्रमेण प्रसन्नो भूत्वा मुख्यातिथिः पुरस्कारविजेतृन् छात्रान्/पुरस्कारविजेत्रीः छात्राः वर्धापयति अन्यान्/ अन्याः च अधिक परिश्रमार्थं प्रोत्साहयति येन ते/ ताः अपि भविष्ये पुरस्कारान् प्राप्नुयुः ।। सः विद्यालयस्य अधिकाम् उन्नतिं छात्राणां च जीवने सर्वविधं साफल्यम् कामयते । सः राष्ट्रियैकतायै परिश्रमाय सच्चरित्राय च सर्वान्/ सर्वाः प्रतिबोधयति । यदा तस्य भाषणम् विरमति, तदा सर्वे/ सर्वाः महाकरतलध्वनिं कुर्वन्ति।

तदनन्तरं छात्रा राष्ट्रगानं गायन्ति, सर्वे स्वस्थाने सावधानाः तिष्ठन्ति। एवं वार्षिकोत्सव सम्पद्यते ।

- रिया दीपक कुमार भूत
VIII C

विद्यार्थी जीवनम्

छात्रकालः मनुष्यजीवनस्य सुवर्णमयः कालः । अस्माकं पुरातनग्रन्थेषु अस्य ईदृशं महत्त्वं यत् अनेन मनुष्यस्य द्वितीयं जन्म मन्यते, स च द्विजः उच्यते । वस्तुतः छात्रजीवनं मनुष्यस्य द्वितीयं जन्म एव विद्यते । यदा मनुष्यः जायते, तदा सः पशुतुल्यः एव भवति, केवलं खादितुं पातुं स्वपितुं च जानाति । परन्तु छात्रजीवने एव सः ज्ञानं लभते, परेषां दुःखम् अवबोद्ध, धर्मस्य तत्त्वं ज्ञातुं, परमशक्तिविषये अनुभवितुं, महापुरुषाणां विचारान् पठितं, सम्यग् आचरितुं च अवसरं लभते । प्राचीनकाले छात्रजीवनं ब्रह्मचर्यम् उच्यते स्म । ब्रह्मचारी तपोमयं जीवनं कठोर व्रतं च आचर्य सरलभावेन केवलं ज्ञानोपार्जने संलग्नोऽभवत् । अनेन तपसा ज्ञानेन च भाविजीवने सः कष्टानि सोढुं समर्थोऽभवत् ज्ञानस्य, विद्यायाः तपसः, दानादिधर्मस्य च विशिष्टं महत्त्वमस्ति मनुष्यजीवने, अन्यथा मनुष्यः पशुतुल्यो भवति । उक्तं हि– येषां न विद्या न तपो न दानं ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः । ते मृत्युलोके भुवि भारभूता मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति ।

अतएव छात्रैरस्य सुवर्णावसरस्य सदुपयोगः कर्तव्यो न च नाशयितव्यः कालः । यद्यस्मिन् काले छात्राः संयमेन, तपसा, परिश्रमेण नियमपूर्वक कार्यं कुर्वन्ति, सत्यमाचरन्ति, गुरूणामादरं कुर्वन्ति, आलस्यं च त्यजन्ति तदा सकले जीवने ते कदापि विफला न भविष्यन्ति। नायं कालः सुखमुपभोक्तुम् । केवलं सुखमिच्छता परिश्रमेण विना विद्या न लभ्यते सर्वविधो विकासश्च न भवति । अत एवोच्यते-

सुखार्थी चेत्यजेद्विद्या विद्यार्थी चेत्त्यजेत् सुखम् ।
सुखार्थिनः कुतो विद्या कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ॥

भाविजीवने सुखार्थमेव छात्रजीवने परिश्रमः क्रियते । छात्रैः नियमितं भोजनं भक्षणीयम्, नियतं च व्यायामेन शरीर पोषणीयम्, आलस्यं त्यक्त्वा ऽ ध्ययनं कर्तव्यम् । तेन शोभनविचारमयानि पुस्तकानि पठितव्यानि, शोभनविचारमयानि नाटकानि चित्राणि च द्रष्टव्यानि, शोभनविचारमयानि गीतानि श्रोतव्यानि गातव्यानि च । अनेन चित्तशुद्धिर्भवति चित्तं च कार्यात् न विचलति ।

- बैभवी
IX B

देवभाषा-संस्कृतम्

संस्कृतम् जगतः एकतमा अतिप्राचीना समृद्धा शास्त्रीया च भाषा वर्तते। संस्कृतं भारतस्य जगतः वा भाषास्वेकतमा प्राचीनतमा। भारती, सुरभारती, अमरभारती, अमरवाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी, गीर्वाणी, देववाणी, देवभाषा, संस्कृतावाक्, दैवीवाक्, इत्यादिभिः नामभिः एतद्भाषा प्रसिद्धा।

भारतीयभाषासु बाहुल्येन संस्कृतशब्दाः उपयुक्ताः। संस्कृतात् एव अधिका भारतीयभाषा उद्भूताः। तावदेव भारत-युरोपीय-भाषावर्गीयाः अनेकाः भाषाः संस्कृतप्रभावं संस्कृतशब्दप्राचुर्यं च प्रदर्शयन्ति।

व्याकरणेन सुसंस्कृता भाषा जनानां संस्कारप्रदायिनी भवति। पाणिनीआष्टाध्यायी इति नाम्नि महर्षिपाणिनेः विरचना जगतः सर्वासां भाषाणाम् व्याकरणग्रन्थेषु अन्यतमा वैयाकरणानां भाषाविदां भाषाविज्ञानिनां च प्रेरणास्थानं इवास्ति।

संस्कृतवाङ्मयं विश्ववाङ्मये अद्‌वितीयं स्थानम् अलङ्करोति। संस्कृतस्य प्राचीनतमग्रन्थाः वेदाः सन्ति। वेद-शास्त्र-पुराण-इतिहास-काव्य-नाटक-दर्शनादिभिः अनन्तवाङ्मयरूपेण विलसन्ती अस्ति एषा देववाक्। न केवलं धर्म-अर्थ-काम-मोक्षात्मकाः चतुर्विधपुरुषार्थहेतुभूताः विषयाः अस्याः साहित्यस्य शोभां वर्धयन्ति अपितु धार्मिक-नैतिक-आध्यात्मिक-लौकिक-वैज्ञानिक-पारलौकिकविषयैः अपि सुसम्पन्ना इयं देववाणी।

- तनिष्का राउतराए, ९ स

भारतीय संस्कृतिः

कस्यापि राष्ट्रस्य जनानां यः साधारणतया परिष्कृतो विशुद्ध उत्तम आचारो व्यवहारश्च भवति स एव तस्य राष्ट्रस्य संस्कृतिरुच्यते । भारतीयसंस्कृतेरिदं वैशिष्ट्य यत् प्राचीनकालादेव या संस्कृतिरत्र पल्लविता समवर्धनापि अक्षुण्णाऽत्र दृश्यते । अस्ति अस्यां संस्कृतौ किञ्चिदेवंविधं यद् उत्कृष्टतमं यच्च न कदापि क्षयि । अस्याः संस्कृतेः उदात्ततत्वदर्शनं न केवलं संस्कृसाहित्ये एव भवति, अपितु ग्रामे ग्रामे नगरे नगरे लोकजीवने च भवति । अहिंसासत्यास्तेयादिधर्मास्तादृशा एव । समन्वयो हि भारतीयसंस्कृतेर्मूलतत्त्वम् । अस्मादेव कारणादत्र बढ्यो वैदेशिक्यः संस्कृतयः समायाताः परन्तु ताः सर्वा एव भारतस्य संस्कृतिः विलीनाः । भारतीयधार्मिककृत्यानां भारतीयपूजाविधीनां च तादृशमस्ति स्वरूपं यत्तत्र प्राचीनार्वाचीनयोः पौरस्त्यपाश्चात्ययोश्च ससुखं सम्मेलनं सम्भाव्यते । भारतस्य विविधेषु प्रदेशेषु विविधा जनाः विविधवेषधारिणो विविधभाषाभाषिणोऽपि विविधदेवान् पूजयन्तोऽपि हृदये समाना एव । सर्व एव एकमेव परमेश्वरं मन्यन्ते, सर्वेषु तीर्थेषु सर्वेषां समानादरो दृश्यते गङ्गा सर्वेषामेव पूज्यतमा, गां च सर्व एव मातरं मन्यन्ते । सर्वत्र विवाहादिसंस्कारेषु त एवं वैदिकमन्त्री उच्चार्यन्ते । अमर्तमनादिमनन्तं परमम् आत्मानं सर्व एव जना विश्वस्य आधारभूतं मन्यन्ते । मद्यधूतादिव्यसनानि सकले भारते निन्द्यन्ते । कर्मफलानुसारेण पुनर्जन्मनि सर्वत्रैव विश्वासो दृश्यते ।।

इयं समन्वयभावनैव सर्वत्र साहित्येऽपि दृग्गोचरीभवति । वेदेषु गीतायां च वयं ज्ञानकर्मोपासनासमुच्चयं पश्यामः । अस्या भावनाया आधारे एव अस्माकं महर्षिभिराचार्यैश्च पुरा समाजः चतुषु वर्णेषु कर्मानुसारं विभक्तः यतो हि समाजोत्थानाय सर्वेषां वर्णानां

समन्वितः प्रयासोऽपेक्ष्यते । तथैव च पूर्ण जीवनसाफल्याय मनुष्यजीवनं चतुषु ब्रह्मचर्यगृहस्थवानप्रस्थसंन्यासाख्येषु आश्रमेषु विभक्तम् । एते चत्वारोऽपि आश्रमाः समन्वितरूपेणैव जीवनस्य पूर्णतां सम्पादयन्ति, न त्वेकैकशः । अयं समन्वय एवं भारतीयसंस्कृतेः प्राणाः अनेनैव च सम्मिल्यास्माभिः स्वातन्त्र्यमधिगतम् । सर्वत्रैव भारते धामकोत्सवेषु कृष्या सह सम्बन्धोऽन्यद् वैशिष्ट्यमस्याः संस्कृतेः । कृषिप्रधाना हीयं संस्कृतिः ग्रामप्रधाना च । अत एव वयं सरलजीवनम् अनुसरन्तोऽपि उत्कृष्टानादर्शान् रामकृष्णबुद्धादिमहापुरुषाणां धारयामः ।।

- रिया दीपककुमार भूत
VII B

सर्वेभ्यः शिक्षिकाभ्यः शिक्षकेभ्यः च समर्पितम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः लभते इह सम्मानम्
किम् अस्ति तत् पदम्
यः करोति देशानाम् निर्माणम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यम् कुर्वन्ति सर्वे प्रणामम्

किम् अस्ति तत् पदम्

यस्य छायायाः

प्राप्तम् ज्ञानम्

किम् अस्ति तत् पदम्
यः रचयति चरित्र जनानाम्
‘गुरु ” अस्ति अस्य पदस्य नाम
सर्वेषाम् गुरूणाम् मम शतं शतं प्रणामाः।।

- निकुंज कुमार, VII

B